शांत, स्निग्ध, गंगा!
मेरे सामने महान मातृत्व है- वंदनीय, अंचनीय!

2. हिंदी कहानी के विकास पर विस्तार से चर्चा कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी रेखाचित्र विधा पर प्रकाश डालिए।

3. कहानी के तत्वों के आधार पर "बड़े भाई साहब" कहानी की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"हार की जीत" कहानी का सार लिखिए।

4. 'हिंसा मनुष्य का मूल स्वभाव है।' नाखून क्यों बढ़ते हैं निबंध के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'मेले का ऊँट' का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. 'बुधिया' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव?' पाठ के आधार पर भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए- (6)
(क) हिंदी निबंध
(ख) व्यंग्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 12624 **K**

Unique Paper Code : 2055002003

Name of the Paper : हिंदी गद्य: उद्भव और विकास (ग)

Name of the Course : **बी.ए. प्रोग्राम हिंदी – जी.ई.**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए । (8×3=24)

(क) जो कुछ पढो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंगरेजो के राज्य का विस्तार बहुत बढा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते। संसार में अनेको राष्ट्र अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते। बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे; मगर उसका अंत क्या हुआ, घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया,

SRI AUROBINDO COLLEGE तमसो मा ज्योतिर्गमय UNIVERSITY OF DELHI

कोई उसे एक चुल्लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी जो कुकर्म चाहे करें; पर अभिमान न करे, इतराए नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया से गया।

अथवा

इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वो किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।"

(ख) "बेटा! तुम बच्चे हो, तुम क्या जानोगे? यदि मेरी उमर का कोई होता तो वह जानता। तुम्हारे बाप के बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ। तुमने कलकत्ते के महलों में जन्म लिया, तुम पोतड़ों के अमीर हो। मेले में बहुत चीजें हैं, उनको देखो। और यदि-तुम्हें कुछ फुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ। आज दिन तुम विलायती फिटिन, टमटम और जोड़ियों पर चढ़कर निकलते हो, जिसकी कतार तुम मेले के द्वार पर मीलों तक छोड़ आए हो, तुम उन्हीं पर चढ़कर मारवाड़ से कलककत्ते नहीं पहुँचे थे। यह सब तुम्हारे साथ की जन्मी हुई हैं। तुम्हारे बाप पचास साल के भी न होंगे, इससे वह भी मुझे भली-भांति नहीं पहचानते। हाँ, उनके भी बाप हों तो मुझे पहचानेंगे। मैंने ही उनको पीठ पर लादकर कलकत्ते पहुँचाया है, वे हों तो मुझे पहचान लें।

अथवा

मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। जिनके पास लोहे के शस्त्र और अस्त्र थे, वे विजयी हुए। देवताओं के राजा तक को मनुष्यों के राजा से इसलिए सहायता लेनी पड़ती थी कि मनुष्यों के राजा के पास लोहे के अस्त्र थे। असुरों के पास अनेक विद्याएँ थीं, पर लोहे के अस्त्र नहीं थे, शायद घोड़े भी नहीं थे। आरयों के पास ये दोनों चीजें थी। आर्य विजयी हुए। फिर इतिहास अपनी गति से बढ़ता गया। नाग हारे, सुपर्ण हारे, यक्ष हारे, गंधर्व हारे, असुर हारे, राक्षस हारे। लोहे के अस्त्रों ने बाजी मार ली। इतिहास आगे बढ़ा । पलीते-वाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने इतिहास को किस कीचड़-भरे चाट तक घसीटा है, यह सबको मालूम है। नख-धर मनुष्य अब एटम-बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है।

(ग) मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाई। बड़े बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भर कर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

अथवा

आँखें उसकी ओर देखतीं, दिमाग अपना काम किए जाता- हाँ, बरसात बीत गयी। बाढ़ खतम हो गई। अब नदी अपनी धारा में है, शांत गति से बहती। न बाढ़ है, न हाहाकार। कीचड़ और खर पात का नाम निशान नहीं।

P.T.O.

SRI AUROBINDO COLLEGE ज्योतिर्गमय UNIVERSITY OF DELHI